AMOGHVARTA
ISSN : 2583-3189

ब्रिटिश भूमि राजस्व प्रणाली का भारतीय किसानो पर प्रभाव

ORIGINAL ARTICLE

Author
जितेश कुमार
इतिहास विभाग
इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय
मीरपुर, रेवाडी, हरियाणा, भारत

शोध सार

भारत सदियों से कृषि प्रधान देश की भूमिका में रहा है। भारत के आर्थिक विकास में कृषि का उल्लेखनीय योगदान रहा हैं। प्राचीन काल से लेकर अब तक की राजव्यवस्थाओ में भूमि राजस्व ने राज्यों को आर्थिक रूप से सुदृढ़ किया है। जिस कारण यूरोपीय शक्तियाँ भी भारत की ओर आकर्षित हुईं। भारत में अंग्रेजों के लिए भू–राजस्व आय का एक प्रमुख स्रोत था। भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान मोटे तौर पर तीन प्रकार की भू–राजस्व नीतियां अस्तित्व में थीं। स्वतंत्रता से पहले, देश में तीन प्रमुख प्रकार की भूमि स्वामित्व प्रणालियों प्रचलित थी जमींदारी प्रथा, महलवाड़ी व्यवस्था,रैयतवाड़ी व्यवस्था इन प्रणालियों में मूल अंतर भू–राजस्व के भुगतान के तरीके को लेकर था (महेश चंद्ररू ब्रिटिश भूमि राजस्व प्रणाली और किसान)। भारत की कमजोर शासक संरचना ने यूरोपीय शक्तियों को भारतीय शासन पर नियंत्रण करने का अवसर प्रदान किया। इस अवधारणा के अनुसार, अंग्रेज शासकों ने भारत को अपने शासन के तहत लाने के बाद भारतीय कृषि और अर्थव्यवस्था पर प्रभाव डालने का प्रयास किया, जिससे वे अधिक संप्रेरणा और सामग्री प्राप्त कर सकें। बढ़ती महत्त्ववकांक्षाओ के चलते अंग्रेजो ने अधिक से अधिक भू राजस्व की प्राप्ति के लिए व्यापारिक फसलों पर जोर दिया जैसे नील, गन्ना, रबर आदि। फलस्वरूप, ब्रिटिश भूमि प्रणाली ने किसानों की आर्थिक और सामाजिक और भारत में ओद्योगिकीकरण स्थिति को गंभीर रूप से प्रभावित किया। यह शोधपत्र आज़ादी से पहले भारत में औपनिवेशिक काल में भूमि प्रणाली की पृष्ठभूमि के उभरने के पीछे के कारणों और किसानों पर पड़े प्रभावों को समझने का एक प्रयास है।

मुख्य शब्द

ब्रिटिश कृषि नीति, राजस्व संग्रह पैटर्न, किसानों की स्थिति, उद्योग.

परिचय

भारतीय कृषि वर्गों में विभिन्न प्रकार की संरचनाएँ हैं, और प्रत्येक वर्ग की अपनी विशेषता होती है। ये विभिन्नताएं भूगोलिक, आर्थिक, सामाजिक, और राजनीतिक कारकों के कारण मौजूद हैं। इन समूहों की रचना भूमि पर अधिकारों के भिन्नीकरण पर निर्भर करती है (जोशी, 1960–2002)। भारतीय किसान वर्ग का इतिहास मुख्य रूप से डी.डी. कोसबी, आर.एस. शर्मा और डैनियल थॉर्नर जैसे विद्वानों द्वारा अध्ययन किया गया है। 'किसान' शब्द को विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया है। हबीब के अनुसार, ''किसान वह व्यक्ति है जो अपने जीवन संगठन के साथ कृषि का आयोजन करता है, अपने खुद के उपकरणों का उपयोग करता है और अपने परिवार के

मजदूरों की मदद से काम करता है'' (हबीब, 2007)। गफ के अनुसार, ''किसान वह व्यक्ति हैं जो प्राचीन साधनों के साथ कृषि या संबधित उत्पादन में शामिल होते हैं और अपने उत्पाद का किसानों के रूप में एक ....जमींदारों या राज्य के प्रतिनिधियों को सौंपते हैं'' (गफ 2000)। भारतीय किसानों को तीन प्रमुख वर्गों में विभाजित किया जा सकता है– धनी किसान, मध्यम किसान, और गरीब किसान। धनी किसानों में मुख्य रूप से भूमिदार, जमींदार और तालुकदार शामिल होते हैं, जबकि मध्यम किसान परिवारिक श्रम के साथ कृषि में लगे होते हैं। गरीब किसान वो होते हैं जिनके पास अपनी जमीन नहीं होती (ओमन,1984)

भारतीय कृषि का इतिहास

भारतीय कृषि का इतिहास बहुत प्राचीन है, और इसका पहला उल्लेख वेदों में मिलता है। वेदों में कृषि के अनुष्ठानों का वर्णन है, और यहाँ धान, गेंहू, और अन्य फसलों की चर्चा की गई है। मौर्य और गुप्त साम्राज्यों के दौरान, कृषि ने विकास किया और अधिक प्रबल बनाया। इस समय बागवानी, धान की खेती, और नीति शास्त्र जैसे कृषि के क्षेत्र में अद्वितीय कृषि अनुष्ठान विकसित हुए। मुगल साम्राज्य के दौरान, बागबानी और कृषि का विकास हुआ, और विदेशी पौधों की प्रवृत्ति भारत में आई। ब्रिटिश शासन के दौरान, भारतीय कृषि पर असर डाला, और व्यापारी उत्पादों की खेती को बढ़ावा दिया। स्वतंत्रता संग्राम के बाद, भारतीय कृषि में सुधार किए गए, और अब भारत दुनिया के अग्रणी अन्न उपज देशों में से एक है। (इंडियन एग्रीकल्चरः डी.एस. त्यागी)

ब्रिटिश भू–राजस्व प्रणाली

जमींदारी प्रथा

जमींदारी व्यवस्था 1793 में लॉर्ड कॉर्नवालिस द्वारा स्थायी बदोबस्त के माध्यम से शुरू की गई थी, जिसमें वास्तविक किसानों के लिए निश्चित किराए या अधिभोग अधिकार के प्रावधान के बिना सदस्यों के भूमि अधिकारों को स्थायी रूप से तय किया गया था (The making of the Raj: Lawrence jame)। जमीदारी व्यवस्था के तहत, जमींदारों के नाम से जाने जाने वाले बिचौलियों द्वारा किसानों से भू–राजस्व एकत्र किया जाता था । जमींदारों द्वारा एकत्र किए गए कुल भू–राजस्व में सरकार का हिस्सा 10/11 में रखा गया और शेष जमींदारों को दिया गया। यह प्रणाली पश्चिम बंगाल, बिहार, ओडिशा, यूपी, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश में सबसे अधिक प्रचलित थी (S.C. Sarkar, 1992)

रैयतवाडी व्यवस्था

दक्षिणी भारत में ब्रिटिश क्षेत्रों में स्थायी बंदोबस्त के विचार से दूर जा रहे थे। एक प्रणाली जिसे रैयतवाड़ी प्रणाली के नाम से जाना जाता है. 18 वी शताब्दी के अंत में कैप्टन अलेक्जेंडर रीड और सर थॉमस मुनरो द्वारा तैयार की गई थी और बाद में जब वह मद्रास प्रेसीडेंसी (1819–26) के गवर्नर थे, तब उन्होंने इसे पेश किया था। रैयतवारी प्रणाली के तहत किसानों द्वारा भू–राजस्व का भुगतान सीधे राज्य को किया जाता था (Uma Kapila)।

इस प्रणाली में रैयत नामक व्यक्तिगत कृषक को भूमि की बिक्री, हस्तातरण और पट्टे के संबंध में पूर्ण अधिकार थे। जब तक रैयत लगान अदा करते रहेंगे उन्हें उनकी जमीन से बेदखल नहीं किया जा सकता था। यह अधिकांश दक्षिणी भारत में प्रचलित था, सबसे पहले तमिलनाडु में पेश किया गया था। बाद में इसका विस्तार महाराष्ट्र, बरार, पूर्वी पंजाब कुर्ग और असम तक किया गया। इस प्रणाली के फायदे बिचौलियों का खात्मा था, जो अक्सर ग्रामीणों पर अत्याचार करते थे। (The land revenue of Bombay: by wiliam Henley)

महलवाड़ी व्यवस्था

19 भी सदी की शुरुआत तक कंपनी के अधिकारियों को यह विश्वास हो गया था कि राजस्व की प्रणाली को फिर से बदलना होगा। ऐसे समय में राजस्व की स्थायी रूप से निर्धारित नहीं किया जा सकता जब कंपनी को अपने प्रशासन और व्यापार के खर्चों को पूरा करने के लिए अधिक धन की आवश्यकता हो (दीवानी एंड रेवेन्यू सिस्टम)। 1822 में अंग्रेज होल्ट मैकजी ने बंगाल प्रेसीडेंसी के उत्तर पश्चिमी प्रांतों (इस क्षेत्र का अधिकांश भाग अब उत्तर प्रदेश में है) में महलवाड़ी प्रणाली के नाम से जानी जाने वाली एक नई प्रणाली तैयार की। महलवाड़ी व्यवस्था

के तहत किसानों से भू–राजस्व पूरे गांव की ओर से जमींदार की नहीं) ग्राम प्रधानों द्वारा एकत्र किया जाता था। पूरे गाँव को महल नामक एक बड़ी इकाई में परिवर्तित कर दिया गया और भू–राजस्व के भुगतान के लिए इसे एक इकाई माना गया। महलवारी प्रणाली के तहत राजस्व को समय–समय पर संशोधित किया जाना था और स्थायी रूप से तय नहीं किया गया था। इस प्रणाली को लॉर्ड विलियम बैंटिक द्वारा आगरा और अवध में लोकप्रिय बनाया गया और बाद में इसे मध्य प्रदेश और पंजाब तक विस्तारित किया गया, (आर.सी दत्त द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी की भूमि राजस्व नीति)।

भारतीय किसानों ने ब्रिटिश शासन से पहले पारंपरिक कृषि उत्पादन में विश्वास किया। ब्रिटिश काल से पहले, भारतीय किसान खाद्य फसलों की खेती करते थे। ब्रिटिश ने सिर्फ राजनीतिक परिवर्तन नहीं लाया, बल्कि वे पारंपरिक कृषि के स्थान पर उद्योग–आधारित कृषि उत्पादन को बनाया। यह इसलिए हुआ क्योंकि उनके पास उद्योग और व्यापार के मामूले में उत्कृष्ट ज्ञान था। (रॉय, 2006)

इन नीतियो का भारतीय कृषि और किसानों पर प्रभाव

जमींदारी प्रथा से जुड़े मुद्दे

कृषकों के लिए गांवों में कृषकों को यह व्यवस्था दमनकारी और शोषणकारी लगती थी क्योंकि जमींदार को जो किराया देना होता था वह बहुत अधिक होता था जबकि भूमि पर उसका अधिकार काफी असुरक्षित होता था। कृषकों को लगान चुकाने के लिए प्रायः ऋण लेना पड़ता था, लगान न चुका पाने पर उन्हें भूमि से बेदखल कर दिया जाता था। जमींदारों के लिए राजस्व इतना अधिक तय किया गया था कि जमींदारों को भुगतान करना मुश्किल हो गया था और जो राजस्व का भुगतान करने में विफल रहे उन्हें अपनी जमींदारी से हाथ धोना पड़ा (आर. सी दत्त)। जमींदार भूमि सुधार के प्रति इतने उत्सुक नहीं थे। जब तक वे जमीन दे सकते थे और किराया प्राप्त कर सकते थे उन्होंने इसे प्राथमिकता दी। कंपनी के लिए 19वीं सदी के पहले दशक तक खेती का धीरे–धीरे विस्तार हुआ और बाजार में कीमतें बढ़ गई। हालांकि इसका मतलब जमींदारों की आय में वृद्धि थी, लेकिन कंपनी के लिए यह कोई लाभ नहीं था क्योंकि इससे राजस्व की मांग में वृद्धि नहीं हो सकती थी जिसे स्थायी रूप से निपटाया जा चुका था। (the British fiscal system by Charles wakefield, 1906)

रैयतवाडी प्रणाली से संबंधित मुद्दे

इस प्रणाली ने अधीनस्थ राजस्व अधिकारियों को बहुत अधिक शक्तियाँ प्रदान कीं, जिनकी गतिविधियों की अपर्याप्त निगरानी की जाती थी। इस प्रणाली में महाजनों और साहूकारों का वर्चस्व था जो किसानों को अपनी जमीन गिरवी रखकर ऋण देते थे। साहूकार किसानों का शोषण करते थे और ऋण न चुका पाने की स्थिति में उन्हें उनकी जमीन से बेदखल कर देते थे। (रणजीत गुहा)

महलवारी प्रणाली से संबंधित मुद्दा

इस प्रणाली का एक बड़ा दोष यह था कि सर्वेक्षण व्यावहारिक रूप से दोषपूर्ण धारणाओं पर आधारित था जिससे हेरफेर और भ्रष्टाचार के लिए जगह बच गई थी। कभी–कभी इससे कंपनी को एकत्रित राजस्व की तुलना में संग्रहण पर अधिक खर्च करना पड़ता था। नतीजतन, सिस्टम को विफल माना गया। (भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था में ब्रिटिश भूमि राजस्व का प्रभाव रू जवाहरलाल नेहरू)

औद्योगीकरण पर राजस्व प्रणाली का प्रभाव

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के आने के बाद, विदेशी व्यापार को बढ़ावा मिला, जिसका परिणमस्वरूप, स्थानीय उद्योग को प्रतिष्ठित उद्योग प्रणाली की स्थिति से बाहर किया गया। ब्रिटिश सरकार ने राजस्व प्रणाली के माध्यम से आर्थिक व्यवस्था को अपने अनुरूपण के लिए पुनर्गठित किया। इसे महत्तवपूर्ण समझ और उद्योग को नियंत्रित किया गया (रजत गुप्ता)। ब्रिटिश सरकार ने भारत के प्राकृतिक संसाधनो को अपने हित के लिए इस्तेमाल किया और इनका अधिकांश भाग अंग्रेजी उद्योग को उपभोग किया। ब्रिटिश सरकार ने विदेशी उद्योग की सुरक्षा के लिए प्रतिबन्ध लगाया प्रवाधान बनाया, जिसने स्थानीय उद्योग को प्रतिबन्धित किया। ब्रिटिश सरकार ने उद्योगो की

स्थापना की, जिससे सस्ता माल बाहार भेजने में मदद मिली, जिसे उनके व्यवसायिक प्रतिष्ठा घाटा मिला। ये सभी कारक ब्रिटिश राजस्व प्रणाली के अंर्तगत आने वाले वर्षों में भारतीय उद्योग पर प्रभाव डाला और उनके विकास को रोकने में सहायक रहे। (अपर्णा बोस)

निष्कर्ष

भूमि राजस्व प्रणाली का प्रारंभ ब्रिटिश शासकों द्वारा भारत में किया गया था और इसका प्रमुख उद्देश्य राजस्व कलेक्शन था। इस प्रणाली के अंतर्गत भूमि कर, मूल स्वामित्व पर कर और दिवानी प्रणाली के माध्यम से भूमि का पुनर्वितरण किया गया, जिससे किसानों के जीवन पर प्रभाव पड़ा। इस प्रणाली ने भारतीय किसानों के साथ बेरोक्रेसी और आर्थिक असमानता को बढ़ावा दिया, खासकर जब उन्हें भूमि के लिए करों की भुगतान करना पड़ा। ब्रिटिश भूमि राजस्व प्रणाली का प्रभाव भारतीय कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर हुआ, जिसके कारण किसानों के आर्थिक स्तर में बदलाव आया। इस प्रणाली का निष्कर्ष यह हो सकता है कि ब्रिटिश भूमि राजस्व प्रणाली के प्रभाव ने भारतीय समाज को समृद्धि से बर्बाद किया और विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक और आर्थिक असमानता को बढ़ावा दिया।

संदर्भ सूची

1. जोशी, पी.सी. (1960–2002) कृषि सामाजिक संरचना और सामाजिक परिवर्तन संख्या, *द इंडियन जर्नल ऑफ स्टैटिस्टिक्स,* सीरीज बी, 31, 479–490।
2. Baden B.H., (2007) *Powell: Administration of Land Revenue and Tenrue in British India,* ESS Publication, New Delhi.
3. Choudary B.B., (1975) The land Market in Eastern India 1793-1940, *Indian Economic and Social Review,* New Delhi.
4. Desai A.R., (1948) *Social Background of India Nationalism,* Popular Prakashan, Bombay.
5. Dutt R.C., The Economic History of India: in the Victorian Age, Vol-II, Ministry of Information and Broadcasting, Govt. of India, New Delhi.
6. Munro and the Ryotwari settlement in Madras 1820-1827 in R.C. Dutt: The Economic Histroy of India, Under Early British Rule.

——==00==——